समाज विकासमाला

कहावतों की कहानियाँ

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

समाज-विकास-माला : १५

कहावतों की कहानियां

लेखक
महावीरप्रसाद पोद्दार

संपादक
यशपाल जैन

१९५७

सस्ता साहित्य मंडल-प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल
नई दिल्ली

चौथी बार : १९५७
मूल्य
छः आना

मुद्रक
हिंदी प्रिंटिंग प्रेस
दिल्ली

समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने आज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों आदमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में सरकार की ओर से यदि कुछ कोशिश हो रही है तो वही काफी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा।

बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जबसे ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही आसान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार और बोलचाल की हो और जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों।

यह पुस्तक-माला इन्हीं बातों को सामने रखकर निकाली गई है। इसमें कई पुस्तकें निकल चुकी हैं। इन सबकी भाषा बड़ी आसान है। विषयों का चुनाव बड़ी सावधानी से किया गया है। छपाई-सफाई के बारे में भी विशेष ध्यान रक्खा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

यदि पुस्तकों की भाषा, शैली, विषय और छपाई में किसी सुधार की गुंजाइश मालूम हो तो उसकी सूचना निस्संकोच देने की कृपा करें।

चौथा संस्करण

बड़े हर्ष की बात है कि इस पस्तक का चौथा संस्करण इतनी जल्दी प्रकाशित हो रहा है। इस माला की सभी पुस्तकें पाठकों को पसंद आ रही हैं, इससे हमें बड़ा आनंद होता है। हमें विश्वास है कि इन सामयिक और उपयोगी पुस्तकों को पाठक चाव से पढ़ेंगे और इनके प्रचार में हाथ बटायंगे।

—मंत्री

पाठकों से

हमारे यहां बहुत-सी कहावतें कही जाती हैं। बहुतों को उनमें से कुछ याद भी होंगी। लेकिन वे कैसे बनीं, उनके बनने की क्या कहानियां हैं, यह बात बहुत कम लोग जानते हैं। इस पुस्तक में आपको कई सुंदर कहावतें और उनकी कहानियां मिलेंगी। आप देखेंगे कि ये कहानियां कितनी रोचक और मनोरंजक हैं।

हमें विश्वास है कि इन कहानियों को पढ़कर आपकी जानकारी बढ़ेगी, आपको आनंद मिलेगा।

ये कहानियां मन से बनाई हुई हैं। इनकी सच्चाई आप किसी किताब में न खोजें। पाठकों को कहावतों के द्वारा कहानियां और कहानियों के द्वारा कहावतें याद हो जायं, इतना ही हम चाहते हैं।

आपको ये कहानियां पसंद आवेंगी। इन्हें दूसरों को भी पढ़वाइये।

—संपादक

कहावतों की कहानियां

: १ :

जात-पांत पूछे नहिं कोय

अकबर बादशाह के यहां एक बार पांच साधु आये। किसीने पूछा, "आप लोग किस जाति के हैं ?"

जवाब मिला, "साधु की जाति क्या ?"

बादशाह ने मन में सोचा, "बात तो ठीक है कि साधु की जाति क्या। लेकिन पहले तो इनकी कोई जाति रही होगी।"

बीरबल वहां हाजिर थे। बादशाह से बोले, "हुजूर, मैं अभी इनकी जाति का पता लगा देता हूं।"

उन्होंने साधुओं से कहा, "आप लोग ईश्वर के बारे में कुछ सुनाइये।"

एक ने सुनाया :

राम नाम लड्डू, गोपाल नाम घी,
हरि का नाम मिसरी, घोल घोल पी।

बीरबल ने मन में सोचा, "यह खाने का लोभी है ब्राह्मण होना चाहिए।"

दूसरे ने सुनाया :

रामनाम की शमशेर पकड़कर, कृष्ण कटारा बांध लिया,
दया धर्म की ढाल बनाकर, यम का द्वारा जीत लिया।

बीरबल ने सोचा कि ढाल, तलवार और कटारी की बात करता है। क्षत्रिय है।

तीसरे ने सुनाया :

साहब मेरा बानियां, सहज करे व्योपार,
बिन डंडी बिन पालड़े, तोले जग संसार।

बीरबल ने सोचा कि डंडी-तराजू की बात करता है। बनिया है।

चौथे ने सुनाया :

राम झरोखे बैठ के सबका मुजरा लेय।
जैसी जाकी चाकरी वैसा वाको देय॥

बीरबल ने कहा, "यह शूद्र है। तभी गरीब को 'चाकरी' सूझती है।"

पांचवां पहुंचा हुआ व्यक्ति था। उसने कहा :

जात-पांत पूछे नहिं कोय,
हरि को भजे सो हरि का होय।

: २ :

इक्के-दुक्के का अल्ला बेली

इस कहावत का मतलब है कि अकेले-दुकेले आदमी की मदद भगवान करता है, पर इस पर जो कहानी कही जाती है, वह कुछ और ही है।

दिल्ली से दस मील दूर, फरीदाबाद के पास एक नाला है। किसी समय वहां घनघोर बन था। वहीं बैठकर फरीदन नाम की एक बुढ़िया भीख मांगा करती थी। उसके बेटे नाले में छिपे रहते थे। जब कोई इक्का-दुक्का मुसाफिर उधर से गुजरता तो बुढ़िया कहती, "इक्के-दुक्के का अल्ला बेली।" उसके डकैत बेटे समझ लेते कि अकेला-दुकेला आदमी है। बस नाले से निकलकर लूट लेते। जब मुसाफ़िर समूह में होते तो पुकारती, "जमात में करामात है।" डकैत समझ जाते कि बहुत हैं। इसी तरह बहुत दिनों तक उसका कारोबार चलता रहा। आखिर में एक दिन उसके सब बेटे पकड़े गये। इसपर बुढ़िया को बड़ा पछतावा हुआ और अपने छली जीवन से उसे घृणा हो गई। अपने पास के पैसों से उसने नाले का



फ़रीबन भीख मांग रही है ।

पुल बंधवा दिया। बुढ़िया के नाम पर उस जगह का नाम फरीदाबाद पड़ गया।

: ३ :

वह पानी मुलतान गया

गोरखनाथ गुरु नहीं हुए थे तब की बात है। वह एक बार रैदास भगत के यहां सत्संग के लिए गये। प्यास लगी, पानी मांगा, लेकिन बाद को यह खयाल आ जाने पर कि रैदास तो चमार हैं, पानी पिया नहीं, अपने कमंडल में ले लिया। वहां से दो

कोस दूर कबीरदास ठहरे हुए थे। गोरखनाथ अपना कमंडल लिये वहां पहुंचे। कबीरदास ने कमंडल की ओर इशारा करके पूछा, "आप पानी लिये कहां फिर रहे हैं?"

गोरखनाथ ने बात बता दी। कबीर की लड़की कमाली खड़ी-खड़ी सब सुन रही थी। वह रैदास भगत की भक्ति और असर के बारे में सुन चुकी थी। अपने पिता से भी उनकी बहुत तारीफ सुनी थी। उसने कमंडल उठाया और उसका पानी पी गई। पानी पीना था कि वह बदल गई। बड़ी ऊंची बातें बोलने लगी। उसके मुख से ज्ञान की धारा बहने लगी। उस पानी का यह असर देखकर गोरखनाथ दौड़े रैदास भगत के यहां पहुंचे। बोले, "महाराज, थोड़ा पानी पिला दीजिए।" इस समय तक कमाली अपने पति के साथ अपनी ससुराल मुलतान चली गई थी। रैदास यह सब देख-सुन चुके थे, बोले,

प्यावे हे (थे) जब पिया नहीं,
तब तुमने बहु अभिमान किया।
भूला जोगी फिरे दिवाना,
वह पानी मुलतान गया।

गोरखनाथ पछताकर रह गये।

: ४ :

पढ़ा है, गुना नहीं

किसी राजा ने अपने बेटे को ज्योतिष पढ़ने एक बड़े ज्योतिषी के पास भेजा। ज्योतिषी का अपना और राजा का लड़का साथ ही पढ़ते थे। कई साल बाद ज्योतिषी ने राजा से विनती की, "महाराज, राजकुमार की पढ़ाई पूरी हो गई।" राजा ने उसकी जांच के लिए एक दिन तय किया। राजकुमार और ज्योतिषी का बेटा दरबार में बुलाये गये। राजा ने मुट्ठी में चांदी की एक अंगूठी लेकर कुमार से पूछा, "बतलाओ, मेरी मुट्ठी में क्या चीज़ है ?"

राजकुमार बोला, "सफेद-सफेद, गोल-गोल-सी सख्त चीज़ है, बीच में उसके सुराख है।"

राजा बहुत खुश हुआ। बोला, "इतना तुमने ठीक बतलाया। उस चीज़ का नाम क्या है ?"

राजकुमार ने बतलाया, "चक्की का पाट।"

राजा को बहुत बुरा लगा। फिर उसने ज्योतिषी के लड़के से पूछा, "तुम बतलाओ, मेरी मुट्ठी में क्या है ?"

उसने झट चांदी की अंगूठी बतला दी।

राजा ने सोचा कि ज्योतिषी ने अपने लड़के को विद्या ठीक सिखाई है, पर मेरे लड़के को बेवकूफ रहने दिया।

उसने ज्योतिषी से यही बात कही। ज्योतिषी बोला, "महाराज, जहांतक विद्या का सवाल है, दोनों ने बराबर ही सीखी है। उसके पहले के सही जवाबों से ही आप अंदाजा लगा सकते हैं; लेकिन अक्ल तो जिसकी जितनी होती है उतनी ही उसके काम आती है। उसमें विद्या का नहीं अक्ल का घाटा है। उसे इस मामूली बात को समझना चाहिए था कि मुट्ठी में चक्की का पाट कैसे आ सकता है? किसीको समझ देना बहुत मुश्किल है। आपके लड़के ने पढ़ा है, गुना नहीं।"

: ५ :

जैसे को तैसा

यह पूरी कहावत यों है :

जैसे को तैसा मिले, सुनिए राजा भील।
पीतल को घुन खा गए, छोरे को ले गई चील॥

एक बार एक आदमी तीर्थ जाते समय अपने घर के पीतल के बर्तन पड़ोसी के यहां रख गया।

पड़ोसी के मन में बेईमानी आ गई। लौटने पर वह लेने गया तो पड़ोसी ने कहा, "भाई, मुझे बड़ा अफसोस है। आपके बर्तनों को तो घुन खा गये।"

उसने समझ लिया कि पड़ोसी की नीयत बिगड़ गई है। वह होशियार आदमी था, कानोंकान किसी-को खबर न होने दी। दूसरे बर्तन खरीदकर अपना काम चलाया। कुछ दिन बाद उसने एक दावत की। मुहल्ले के बहुत-से लोग उसके यहां आये। और सब तो खा-पीकर वापस चले गये, लेकिन उस बर्तन वापस न देनेवाले पड़ोसी के बच्चे को उसने चुपके से एक अलग कमरे में अपने बच्चों के साथ खेलने को कर दिया। मां-बाप ने बच्चे को इधर-उधर बहुत खोजा, पर कहीं पता न चला। हारकर वहां के राजा भील के यहां खबर की। राजा ने कहा, "तुम्हारा किसी पर शक है?"

उसने अपने इस तीर्थ-यात्री पड़ोसी का नाम ले दिया। राजा ने उसे बुलाकर पूछा, "क्योंजी, तुमने इसके लड़के को देखा है?"

उसने कहा, "महाराज, देखा क्यों नहीं, मेरे सामने ही तो उसे चील ले गई।"

राजा ने कहा, "इतने बड़े लड़के को चील कैसे

ले जा सकती है ?"

उसने कहा, "महाराज, वैसे ही जैसे पीतल को घुन खा सकते हैं।"

राजा ने पूछा, "पीतल को घुन कैसे खा सकते हैं ?"

उसने कहा, "यह मेरे इस पड़ोसी से पूछिये।"

पूरा किस्सा मालूम होने पर राजा ने उसके बर्तन वापस दिलवा दिये। लड़का अपने मां-बाप के पास पहुंच गया।

: ६ :

लेना एक न देना दो

एक मोर और एक कछुए में बड़ी दोस्ती थी। मोर पेड़ पर रहता और कछुआ उसीके नीचे पोखरे में। मोर मौज से चुगता, पोखरे से पानी पीता और मस्त होकर नाचता। कछुआ उसका नाच देखकर खुश होता। दुर्भाग्य से एक दिन बहेलिए ने मोर को अपने जाल में फंसा लिया और उसे बाजार में बेचने ले चला। मोर बहेलिया से बोला, "अगर तुम थोड़ी-सी दया करो तो मैं अपने दोस्त कछुए से मिल लूं, क्योंकि अब सदा के लिए वियोग होने वाला है।"

बहेलिया मोर की बात मानकर उसे कछुए के

पास ले गया। अपने दोस्त को बहेलिए के हाथ में पड़े देखकर कछुए का जी भर आया। उसे बड़ा दुःख हुआ। उसने बहेलिए से मोर को छोड़ देने की विनती की। बहेलिया बोला, "वाह-वाह, इस तरह मैं अपना शिकार छोड़ता चलूं तो मैं भूखों मर जाऊं।"

कछुए ने कहा, "मैं तुम्हें इसे छोड़ने का इनाम दूं तो ?"

"तब मुझे छोड़ने में क्या उज्र है।"

इसपर कछुए ने पोखरे में डुबकी लगाई और अपने मुंह में एक सुंदर लाल लेकर निकला। लाल बहेलिए को सौंप दिया। बहेलिया खुशी से फूला न समाया। लाल पाते ही उसने मोर को छोड़ दिया। थोड़ी दूर चलकर बहेलिए के मन में लालच आया कि मैंने दो लाल क्यों न मांगे ? यह सोचकर वह लौट पड़ा और कछुए के पास आकर बोला, "तुमने तो मुझे ठग लिया है। मैं एक लाल पर मोर को छोड़नेवाला नहीं था। वैसा ही एक लाल मुझे और दो, नहीं तो मैं मोर को फिर पकड़ लूंगा।"

कछुए ने मोर को पहले ही कह दिया था कि वह वहां से दूर उड़ जाय। बहेलिए के लोभ ने कछुए को

नाराज़ कर दिया। वह बोला, "ठीक है। लाओ, वह लाल मुझे दो। मैं उसीकी जोड़ का दूसरा लाल पोखरे के भीतर से खोजकर ला दूं।"

लालच ने बहेलिए की अक्ल पर परदा डाल दिया। वह भूल गया कि 'हाथ में का एक, झाड़ी में के दो से अच्छा।' उसनें हाथ का लाल तत्काल कछुए को दे दिया। कछुए ने लाल लिया और पानी में यह कहता हुआ गोता लगा गया कि मैं ऐसा बेवकूफ नहीं हूं, जो अब तुझे दो दूं। तुझे तो एक लेना नहीं और मुझे दो देना नहीं।

: ७ :

जैसा करे, वैसा भरे

एक पतोहू अपनी बूढ़ी सास को टूटी कठौती में खाना दिया करती थी। संयोग से एक दिन सास के हाथ से कठौती छूट गई और धरती पर गिरकर टुकड़े-टुकड़े हो गई। बुढ़िया का बेटा उसी समय कहीं बाहर से आया था। उसने कठौती के टूटने पर अपनी मां को एक जोर की डांट बतलाई। बुढ़िया इस मामूली नुकसान पर बेटे से झिड़की की उम्मीद न करती थी। बेचारी रो पड़ी। बहू खुश थी कि सास को आज

अच्छी डांट मिली। पहले कभी ऐसा अवसर नहीं



कठौती धरती पर गिरकर टुकड़े-टुकड़े हो गई।

आया था कि बेटा अपनी मां को डांटता। अक्सर तो उसका पति अपनी मां की ही तरफदारी किया करता था। आज पति के इस नए रुख पर उसे बड़ी खुशी हुई। उसने सोचा कि मैं अकेली ही सास को बुरा नहीं समझती हूं। बेटा भी मां की बातों से नाराज है। मेरी सास है ही खोटी। मैं तो पराई 'जाई' हूं, पर बेटा तो सास का अपना ही जाया है।

लेकिन जब मां ने बेटे से डांटने की वजह पूछी

तो उसने आंखें भरकर कहा, "मां, क्या तुम समझती हो कि मैंने तुम्हें उस टूटी कठौती के टूटने पर डांटा है ? डांटने का असली कारण यह था कि तुमने कठौती नहीं, एक परंपरा तोड़ दी। वह कठौती घर में कम-से-कम तबतक तो रहनी ही चाहिए थी, जबतक कि मेरी पतोहू घर में आ जाती। वह देख लेती कि सास को क्या और कैसे बर्तन में खाना दिया जाता है। तब वह भी अपनी सास से इसी तरह बरतती। उस समय मेरी स्त्री को सीख मिलती कि 'जैसा करे, वैसा भरे।'

उसकी स्त्री सारी बातें सुन रही थी। आखिरी कहावत सुनकर उसकी आंखें खुल गईं। अपना दुःखपूर्ण भविष्य उसकी आंखों के सामने फिर गया। उस दिन से उसने अपनी सास के साथ अच्छा व्यवहार करना शुरू कर दिया।

: ८ :

जिसकी लाठी उसकी भैंस

एक ब्राह्मण देवता को कहीं जजमानी में एक अच्छी भैंस मिली। उसे लेकर घर को रवाना हुए। बीच में बड़ा सुनसान रास्ता था। वहां एक अहीर मिल गया। हाथ में लंबी लाठी और शरीर से भी

लंबा-चौड़ा। उसने ब्राह्मण देवता से दो-चार इधर-उधर की बातें करने के बाद कहा, "यह भैंस मुझे दे दो।"

ब्राह्मण ने कहा, "क्यों भाई ?"

वह बोला, "मैं क्यों-व्यों नहीं जानता। भैंस छोड़कर यहां से चुपचाप चले जाओ, वरना भैंस तो जायगी ही, खोपड़ी के भी टुकड़े होंगे।"

ब्राह्मण ताकत में अहीर से कम न था, लेकिन उसका हाथ खाली था। करे तो क्या करे ? पर अक्ल उसमें अधिक थी। बात बनाकर बोला, "भैंस ले भले ही लो, पर ब्राह्मण की चीज यों लेने से तुम्हें पाप लगेगा। बदले में कुछ देकर लेते तो पाप से बच जाते।"

अहीर ने कहा, "यहां मेरे पास देने को क्या धरा है ?"

ब्राह्मण ने कहा, "और कुछ न सही तो लाठी से ही भैंस का बदला कर लो।"

अहीर खुश हुआ। लाठी ब्राह्मण को पकड़ा दी और भैंस पर दोनों हाथ रखकर खड़ा हो गया। ब्राह्मण ने कहा, "हट, भैंस के पास से, नहीं तो अभी खोपड़ी दो होती है।"

अहीर ने पूछा, "क्यों ?"

ब्राह्मण नें कहा, "क्यों के क्या मानी ? जिसकी लाठी उसकी भैंस।"

अहीर नें अपनी मूर्खता समझी और चुपचाप वहां से चला गया।

: ६ :

मन चंगा तो कठौती में गंगा

रैदास भगत अपने घर के बाहर सड़क पर बैठकर जूते गांठा करते थे। एक दिन उसी रास्ते एक पंडितजी गंगा-स्नान को जा रहे थें। चलते-चलते उनका जूता टूट गया। रास्ते में चमार को पाकर जूता गंठवाने खड़ें हो गयें। रैदास पहले किसी दूसरे के जूते की मरम्मत कर रहे थें। पंडित बोले, "भाई, मेरा जूता ज़रा जल्दी गांठ दो। मुझें गंगाजी जाना है।"

रैदास ने कहा, "हाथ का पहला काम पूरा करके अभी आपका करता हूं। बैठ जाइए। जल्दी हो जायगा।"

पहले काम को निबटाकर रैदास मन लगाकर पंडितजी के जूते की सिलाई करनें लगें। पंडितजी बोले, "अरे इतना बड़ा पर्व है। हम लोग बीस-बीस कोस चलकर नहाने आये हैं। तुम्हारे तो यह कोस भर

पर गंगाजी है। क्या तुम नहानें न जाओगे ?"

रैदास काम करते बोले, "महाराज, मैं गरीब आदमी गंगा नहाता रहूं तो बाल-बच्चों को रोटियों का ठिकाना लगाना कठिन हो जायगा।" (कुछ रुककर) "अजी, मन चंगा तो कठौती में गंगा।"

पंडितजी बोले, "तुम गंवार हो। तुम्हें आज के पर्व के फल का पता नहीं। इसीलिए ऐसा कहते हो। लेकिन तुम्हारा न जाना ही ठीक है। चमार के गंगाजी में नहानें और उस जल के छींटे दूसरों पर पड़ने से गंदगी फैलेगी।"

रैदास ने इस बात पर ध्यान न दिया और पंडितजी के काम को पूरा करके उनके सामनें रख दिया।

पंडितजी टेंट से एक पैसा निकालकर रैदास को देनें लगे। रैदास बोले, "मैं आपसे मजूरी नहीं लेना चाहता। मेरा एक काम कर दीजिए।"

पंडितजी ने पूछा, "क्या ?"

रैदास बोले, "ये दो सुपारी मेरी ओर से गंगाजी में भेंट चढ़ा दीजिए, लेकिन एक शर्त के साथ कि गंगाजी हाथ बढ़ाकर इन्हें लें।"

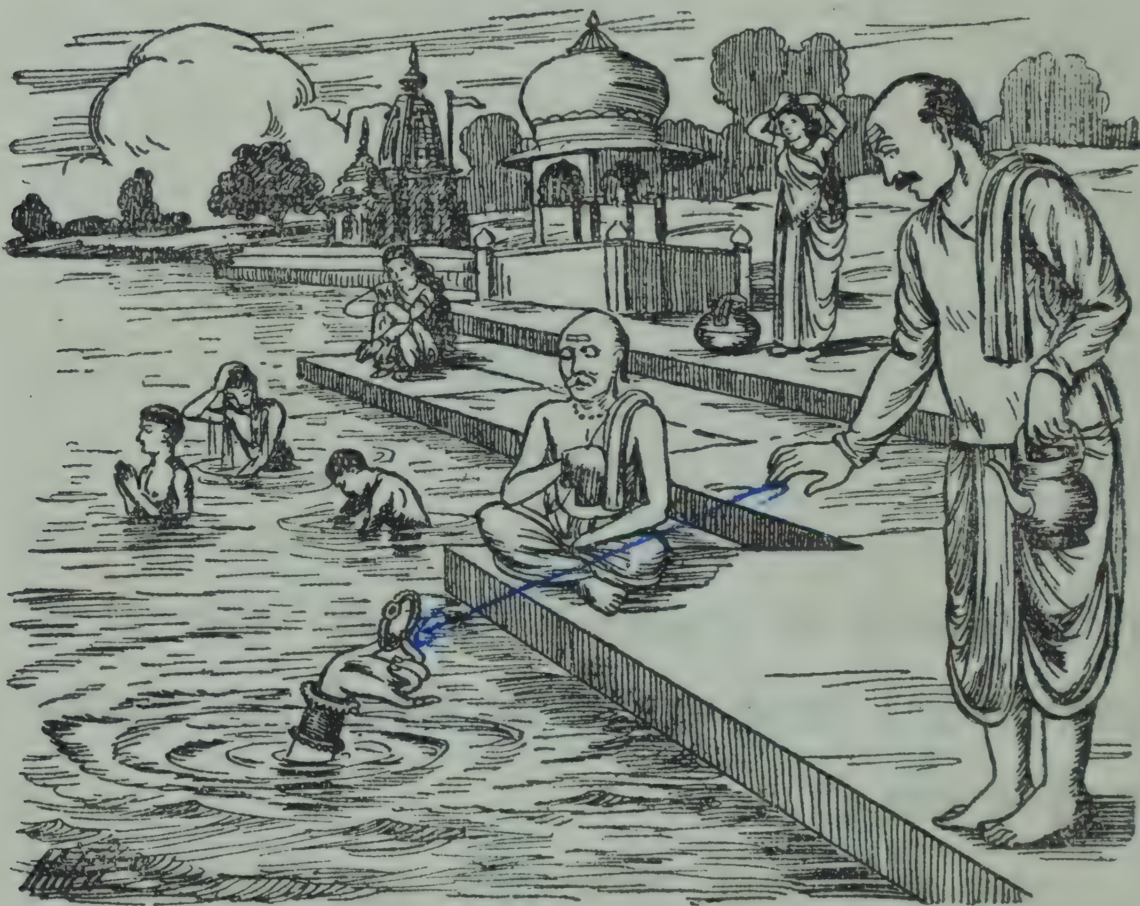
पंडितजी मन में उसकी ऐंठ पर हँसे, पर रास्ता

तय करने की जल्दी में अधिक बहस में न पड़कर सुपारियां झोले में डाल लीं। घाट पर पहुंचकर नहाए-धोए, पूजा-पाठ किया। वापस होने को थे कि रैदास की दोनों सुपारियां याद आईं। सोचा—लाओ, गंगाजी में फेंक चलूं। पर रैदास की बात याद आई कि गंगाजी हाथ बढ़ाकर लें, तभी देना। रैदास ने यह चीज कुछ ऐसे ढंग से कही थी कि पंडितजी उसे भूल न सकते थे। पंडितजी को विश्वास तो न था कि ऐसा हो सकता है, पर कहने में लगता भी क्या था? गंगाजी को सुनाकर बोले, "यह रैदास की दो सुपारियां हैं। उसने कहा है कि गंगाजी हाथ बढ़ाकर लें तो दे देना।"

जल में से उसी समय एक हाथ निकला और सुपारी लेकर अंदर हो गया। इसके बाद दूसरा हाथ सोने का सुंदर एक कीमती कंगन लिये निकला। साथ ही कोई कहता सुनाई दिया, "यह प्रसाद रैदास को दे देना और कहना कि तुम्हारी भेंट गंगा ने स्वीकार की है।"

इन बातों ने ब्राह्मण को अचंभे में डाल दिया। उसके मन में रैदास के लिए जलन हो गई। घर लौटते समय राह में रैदास का घर पड़ा, पर वह वहां

ठहरने क्यों लगा। उस कीमती कंगन को देखते ही उसके मन में लोभ आ गया। घर पहुंचते ही ब्राह्मणी



"रैदास को कह देना, तुम्हारी भेंट गंगा ने स्वीकार की है।"

को कंगन दिखाया। देखकर वह खुश हो गई। ब्राह्मणी को घटना भी सुनाई, पर कंगन की खुशी में ब्राह्मणी ने उधर अधिक ध्यान न दिया। वह मगन थी कि इस कंगन को बेचकर उनकी गरीबी दूर हो जायगी। सोने का जवाहिरात जड़ा कंगन, उसकी कीमत का क्या ठिकाना ? ब्राह्मणी पंडित से बोली, "इसे राजा के यहां ले जाकर भेंट करो। पूरा इनाम मिलेगा। अब

जीतेजी हम लोगों का भिखमंगी से पिंड छूट जायगा।"

पंडित कंगन लेकर दरबार में पहुंचे। राजा उस कंगन की भेंट पर बहुत खुश हुए। पंडित को एक लाख रुपया इनाम में दिलवाकर विदा किया। कंगन रानी के पास गया। वह देखकर लट्टू हो गई। हाथ में पहनकर देखा। सबने बड़ी तारीफ की। पर कहा, "महारानी का दूसरा हाथ सूना लगता है।" राजा के पास खबर हुई कि इसका जोड़ा चाहिए। फौरन पंडित बुलाये गये। राजा ने कहा, "इसका जोड़ा लाओ, नहीं तो घरबार लुटवाकर देश-निकाला मिलेगा।"

पंडित बड़े घबराए। उन्होंने राजा को कंगन पाने की सारी कहानी कह सुनाई। राजा बोले, "जो कुछ कहना हो, रैदास से जाकर कहो। मुझे तो गंगाजी से इसका जोड़ा लाकर दो।"

पंडित राजा के दिये एक लाख रुपया लेकर रैदास भगत के यहां पहुंचे। रुपया उनके सामने रखा और सब बीती बात कह सुनाई। साथ ही रोकर बोले, "भगत, किसी तरह जान बचाओ। गंगाजी के पास जाकर इसका जोड़ा लाकर दो। एक लाख तो यह लो और एक लाख जोड़ा मिलने पर और ले लेना।"

भगत ने कहा, "महाराज, रुपया मुझे नहीं चाहिए। यह तो आप ले जाइये। गंगामाई मेरी



रैदास ने कहा, "महाराज, रुपया मुझे नहीं चाहिए।"

मजूरी से खाने भर को देती हैं और गंगाजी तक जाने का मेरे पास समय नहीं है। पर यह मैं जरूर चाहता हूं कि आपको राजा की नाराजी न उठानी पड़े।"

इसपर ब्राह्मण घिघियाकर बोला, "तो जैसा तुम ठीक समझो, करो।"

भगत रैदास ने चाम भिगोनेवाली अपनी उसी कठौती पर कपड़ा डाला और कहा, "मन चंगा तो

कठौती में गंगा।" कपड़ा उठाते ही उसमें चमचमाता हुआ ठीक उसी जोड़ का कंकन दिखाई दिया।

रैदास ने ब्राह्मण को देकर कहा, "यह लीजिए। जाकर राजा को दे आइये।" ब्राह्मण रैदास के पैरों में गिर पड़ा और अपनी भूल के लिए माफ़ी मांगने लगा। उसने रैदास भगत से वह लाख रुपये रखने के लिए बहुत जोर दिया; पर रैदास ने कहा, "मैं अपनी मजूरी से सुखी हूं, मुझे ज्यादा नहीं चाहिए।"

: १० :

चोर की दाढ़ी में तिनका

किसी काजी के यहां चोरी का एक मुकदमा आया। पुलिस ने शक में कई आदमियों को पकड़ कर अदालत में पेश किया। काजी के सामने जो सबूत थे, उनसे वह फैसला नहीं कर पाते थे कि असली चोर कौन है। उन्हें एक तरकीब सूझी। वह बोले, "चोर की दाढ़ी में तिनका।" इतना सुनते ही चोर का माथा ठनका। उसे लगा कि कहीं उसकी दाढ़ी में तिनका न हो और वह अपनी दाढ़ी टटोलने लगा। मन में डर होने से उसका चेहरा उतर गया। काजीसाहब ने योंही एक

तीर फेंका था, वह निशाने पर लग गया। चोर पकड़ा गया।

: ११ :

निन्नानवे का फेर

किसी धनी सेठ के पड़ोस में एक गरीब दर्जी रहता था। उसको रुपये-बीस आने की मजदूरी मुश्किल से बनती थी, पर वह उतने में ही खुश था। वे मियां-बीवी दो ही थे। रहने को छोटा-सा घर का मकान था। सस्ती का जमाना था। अच्छा खाते, अच्छा पहनते। जोड़ने से उन्हें कुछ मतलब न था। उधर सेठ की आमदनी का कोई ठिकाना न था। लेकिन जोड़-जोड़कर धरना और धन से धन पैदा करना, सिर्फ यही उनका काम था। न पेट को पूरा खाना देते, न तन को कपड़ा और जब अपने पेट और तन के लिए ही इस कदर कंजूस थे तब दूसरों को देने-दिलाने की तो बात ही क्या थी।

सेठानी ने एक दिन अपनी खिड़की से दर्जी और उसकी बीवी को खूब अच्छा खाते देखा, कपड़े तो वह दोनों को हमेशा ही साफ-सुथरे पहनें देखती थी। चेहरे दोनों के हरदम खिले रहते थे। सेठ के पास इतना धन होते हुए भी वह खुश न थे। कमाने और जोड़ने

की फिक्र तो थी ही, ऊपर से बड़ी फिक्र यह और थी कि हमारे पीछे इस धन को भोगेगा कौन ? सेठानी को तो दिन-रात इसका भींकना था कि उसके अबतक कोई बच्चा नहीं हुआ। बच्चा तो दर्जी के भी न था, लेकिन उसको इसकी कोई चिंता न थी।

एक दिन सेठानी सेठ के सामने दर्जी के सुखी जीवन की चर्चा करते हुए बोली, "हमसे ये गरीब मर्द-औरत कहीं सुखी दिखाई देते हैं। इतनी कम कमाई में ये इतने सुखी कैसे हैं ?"

सेठ ने कहा, "असल बात यह है कि ये 'निन्नानवे के फेर' में नहीं पड़े हैं।"

"वह क्या होता है ?" सेठानी नें पूछा।

सेठ ने कहा, "यों जबानी बताने से वह तुम्हारी समझ में नहीं आवेगा। इन्हें निन्नानवे के फेर में डालकर ही तुम्हें दिखाना होगा। उसमें घर से कुछ जायगा, लेकिन बात तुम्हारी समझ में आ जायगी।"

इसके बाद सेठ ने एक रूमाल में निन्नानवे रुपये बांधकर एक दिन रात को सेठानी के द्वारा दर्जी के आंगन में डलवा दिये। सवेरे ही दर्जी की स्त्री को वह पोटली मिली। उसने पति को दिखाई। खोली तो उसमें एक कम सौ रुपये निकले। दर्जी बोला, "जान पड़ता है

कि कोई चील या बंदर किसीके यहां से रूमाल में बंधे ये रुपये उठा लाया है और यहां हमारे आंगन में यह पोटली गिर गई है। लाओ, ये रुपये मैं गांव के मुखिया को दे आऊं, जिसके होंगे, वह ले जायगा।"

दर्जी की स्त्री बोली, "ऐसी क्या जल्दी है? कोई डुग्गी पिटेगी, कोई इनका हकदार खड़ा होगा तो ये रुपये उसे दे दिये जायंगे, नहीं तो हम समझेंगे कि ये रुपये भगवान ने हमारे लिए भेजे हैं।"

दर्जी ने रुपये मुखिया के यहां दे आने का बहुत आग्रह किया, पर उसकी स्त्री न मानी।

कई दिन बाद एक दिन स्त्री ने कहा, "आखिर तुम हमेशा तो कमाते ही नहीं रहोगे, बुढ़ापा आयगा, आंखें, हाथ काम नहीं करेंगे, उस समय के लिए हमें अभी से थोड़ा-थोड़ा बचाकर रखना चाहिए।"

दर्जी ने जवाब दिया, "क्या जोड़ने की बात करती हो? पैसा जोड़ना दुःख जोड़ना है। बुढ़ापे में भगवान कहीं चला जाता है? जो भगवान अभी पालता है, वह बुढ़ापे में हमें न पालेगा।"

"तुम तो फक्कड़ तबियत के हो। फिर मर्द हो। चाहे जैसे गुजर कर सकते हो, पर औरत के लिए तो सौ संकट होते हैं।" स्त्री ने कहा।

दर्जी ने कहा, "तुम कैसे कहती हो कि कुछ जमा-पूंजी रहने से ही हाल अच्छे रहते हैं ? आदमी की जमा-पूंजी जाते देर कितनी लगती है ? रुपये की शकल में इन ठीकरों का तुम्हें बड़ा भरोसा है, भगवान का नहीं !"

"भगवान का भरोसा तो सब है ही, लेकिन रुपयों से भो दुनिया का बहुत काम चलता है। देखो, अपने बगल में ही सेठजी हैं । कितनी बड़ी हवेली खड़ी है, कितने दास-दासी इनकी चाकरी में हैं !" स्त्री ने कहा।

"तुम समझती हो सेठ-सेठानी बड़े सुखी हैं ? पूछो न एक दिन सेठानी से। रुपये से सबकुछ होता है तो वे एक बच्चा क्यों नहीं कर लेते ?"

"जो हो, मैं कहती हूं कि कुछ जोड़ना जरूर चाहिए।"

"मालूम होता है कि निन्नानवे रुपयों ने तुम्हारे जी में जोड़ने की हवस पैदा कर दी है," दर्जी ने कहा। "इसीलिए इस बला को मैं घर से बाहर निकालना चाहता था।"

स्त्री अपने हठ पर अड़ी रही और रोज की आमदनी में से कुछ-न-कुछ बचाकर उस निन्नानवे को बढ़ाने लगी। कुछ दिनों में निन्नानवे के सौ हुए तो उसे बड़ी खुशी हुई। मन में कहने लगी, "आज तो मेरे पास

पूरे एक सौ रुपये हैं, मैं चाहूं तो कई जेवर चांदी के इन रुपयों से बनवा सकती हूं।"

धीरे-धीरे रुपये बढ़ने लगे और उनका सुख घटने लगा। खाने-पीने-पहनने में कमी होने लगी। दोनों के चेहरे भी उतने खिले दिखाई नहीं देते थे। चेहरों पर कुछ-कुछ चिंता छाई रहने लगी।

सेठ ने एक दिन सेठानी से पूछा, "कहो, पड़ोसी का क्या हाल है?"

सेठानी बोली, "अब तो हमारी ही-सी दशा उनकी हो गई है।"

यह था "निन्नानवे का फेर।"

: १२ :

ऊंट किस करवट बैठता है?

एक कुंजड़ा और कुम्हार गांव में पास-पास रहते थे। एक बाजार में दोनों को अपना सामान बेचने ले जाना था। दोनों ने मिलकर एक ऊंट किराए किया और एक-एक तरफ अपना-अपना सामान लाद दिया। रास्ते में जाते-जाते बीच-बीच में ऊंट अपनी गर्दन घुमाकर कुंजड़े के साग-पात में से कुछ खींच लेता। इसपर कुम्हार हँसता। कुंजड़ा कहता, "देखना है, ऊंट किस

करवट बैठता है ?"

बाजार में पहुंचकर ऊंट के बैठाये जाने पर वह बोझेवाली करवट बैठा। नतीजा यह हुआ कि कुम्हार के बहुत-से बर्तन चूर-चूर हो गये।

अब कुंजड़े ने कुम्हार की हँसी का पूरा बदला चुका दिया।

: १३ :

हाथ-पैर न हिलाना

एक बेर के पेड़ के नीचे दो आलसी पड़े थे। एक की छाती पर एक बेर टपका। उसने कहा, "दोस्त, जरा यह बेर उठाकर मेरे मुंह में डाल देना। देखूं तो कैसा है ?"

दूसरे ने कहा, "अरे, कैसे उठूं मैं, कुत्ता मेरा मुंह चाट रहा है। पहले तुम इसे हटा दो।"

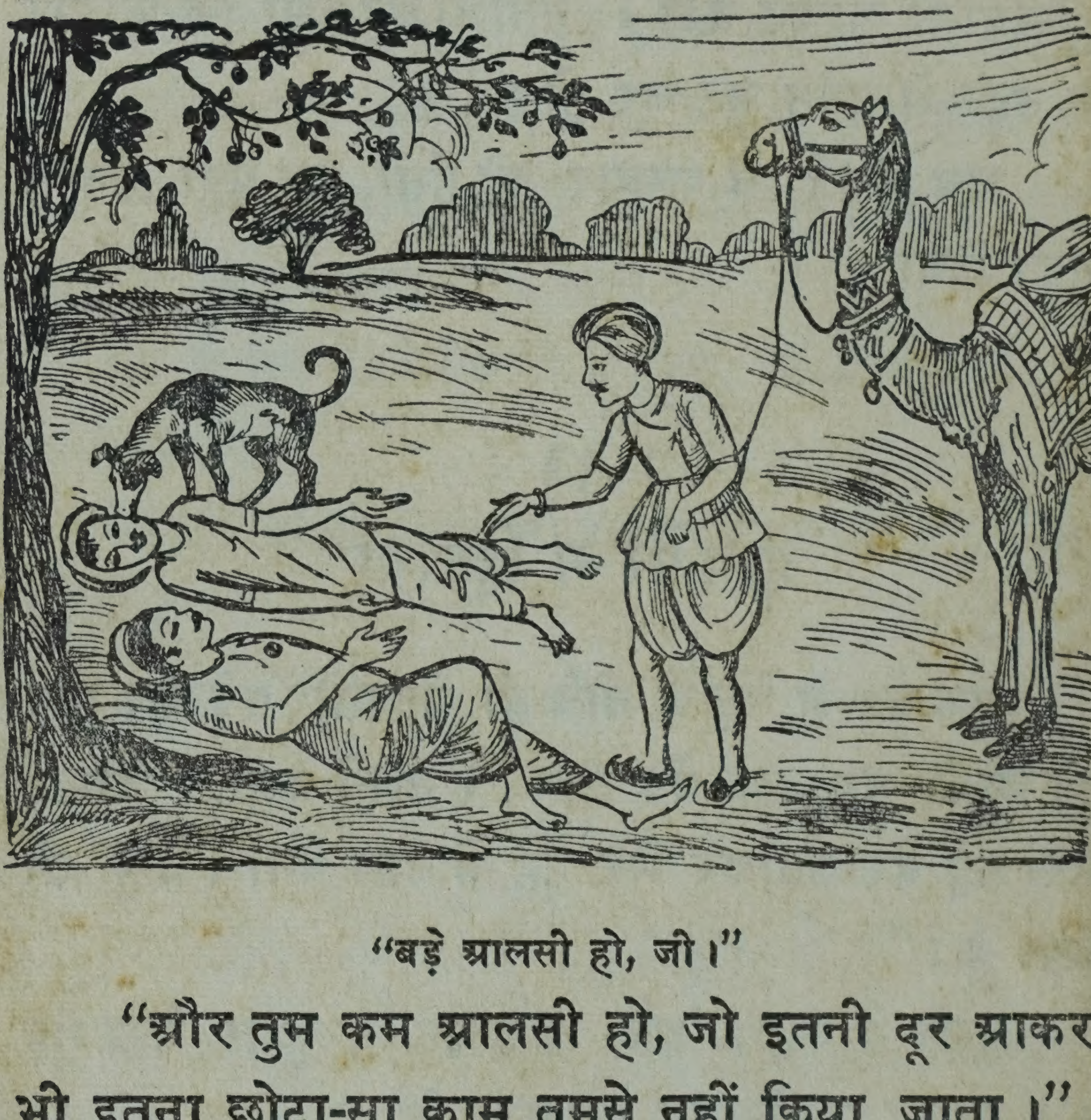
उधर से एक ऊंटवाला गुजर रहा था। पहले आलसी ने पुकारा, "ओ ऊंटवाले भाई, जरा इधर आना।"

ऊंटवाला आया। पूछा, "क्या है ?"

"जरा भाई, यह बेर मुंह में डाल दो।"

"अच्छा, इसीके लिए तुमने मुझे इतनी दूर से

बुलाया था ? छाती पर पड़ा बेर तुमसे अपनें आप मुंह में नहीं डाला जाता ? बड़े आलसी हो, जी।"



"बड़े आलसी हो, जी।"

"और तुम कम आलसी हो, जो इतनी दूर आकर भी इतना छोटा-सा काम तुमसे नहीं किया जाता।"

ऊंटवाले ने देखा कि ऐसे आदमी से बहस करना बेकार है, जो हाथ-पैर नहीं हिलाता, सिर्फ जबान की कैंची चलाने में ही उस्ताद है और वह अपने रास्ते चाल गया।

समाज-विकास-माला की पुस्तकें

१. बद्रीनाथ
२. जंगल की सैर
३. भीष्म पितामह
४. शिवि और दधीचि
५. विनोबा और भूदान
६. कबीर के बोल
७. गांधीजी का विद्यार्थी-जीवन
८. गंगाजी
९. गौतम बुद्ध
१०. निषाद और शबरी
११. गांव सुखी, हम सुखी
१२. कितनी जमीन
१३. ऐसे थे सरदार
१४. चैतन्य महाप्रभु
१५. कहावतों की कहानियां
१६. सरल व्यायाम
१७. द्वारका
१८. बापू की बातें
१९. बहुबली और नेमिनाथ
२०. तंदुरुस्ती हजार नियामत
२१. बीमारी कैसे दूर करें ?
२२. माटी की मूरतजागी
२३. गिरिधर की कुंडलियां
२४. रहीम के दोहे
२५. गीता प्रवेशिका
२६. तुलसी-मानस-मोती
२७. दादू की वाणी
२८. नजीर की नज्में
२९. संत तुकाराम
३०. हजरत उमर
३१. बाजीप्रभु देशपांडे
३२. तिरुवल्लुवर
३३. कस्तूरबा गांधी
३४. शहद की खेती
३५. कावेरी
३६. तीर्थराज प्रयाग
३७. तेल की कहानी
३८. हम सुखी कैसे रहें ?
३९. गो-सेवा क्यों ?
४०. कैलास-मानसरोवर
४१. अच्छा किया या बुरा ?
४२. नरसी महेता
४३. पंढरपुर
४४. ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती
४५. संत ज्ञानेश्वर
४६. धरती की कहानी
४७. राजा भोज
४८. ईश्वर का मंदिर
४९. गांधीजी का संसार-प्रवेश
५०. ये थे नेताजी
५१. रामेश्वरम्
५२. कब्रों का विलाप
५३. रामकृष्ण परमहंस
५४. समर्थ रामदास
५५. मीरा के प[illegible]
५६. मिल-जुलकर काम करो
५७. कालापानी
५८. पावभर आटा

मूल्य प्रत्येक का छः आना

छः आना